तृतीय अध्याय

"अलका सरावगी के उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन की समस्याएँ"

तृतीय अध्याय

''अलका सरावगी के उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन की समस्याएँ''

प्रस्तावना :-

नारी विधाता की रचना की उच्चतम परिकल्पना का साकार रूप है। समाज में नारी और पुरूष दोनों का अस्तित्व समान है। सच पूछा जाय तो सृष्टि के मूल में नारी का ही अस्तित्व प्रधान है। अत: उन दोनों को समान मानने में ही सृष्टि की वास्तविकता है। किंतु सदियों से भारतीय समाज पुरूष प्रधान रहा है। जीवन के हर क्षेत्र में नारी को दूसरा स्थान ही मिला है। सामाजिक रीति-रिवाज, पारिवारिक बंधनों में सदियों से नारी बँधी हुई है।

प्रारंभ से नारी में मानव जीवन के सभी क्षेत्रों को अपनी दया, माया, ममता, मधुरिमा, अगाध विश्वास तथा समर्पण से अभिषिक्त किया है, आत्मोत्सर्ग के लिए प्रेरणा दी है। इसी कारण नारी को समाज में आदर्श प्राप्त हो रहा है। और उसके स्थान में भी परिवर्तन हो रहा है। मातृत्व की पीडा में सुख-आनंद मानकर नारी ने मानव का सृजन किया है। इसी कामना के कारण नारी त्याग और सेवा की प्रतीक बन गई है। इसलिए राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त व्यथा के साथ नारी के संबंध में कहते हैं -

''अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी,
आँचल में दूध और आँखों में पानी।''

वास्तव में नारी को देवता मानना चाहिए। लेकिन दुर्भाग्य से उसे पुरूष द्वारा शोषित, प्रताडित एवं उपेक्षित किया जाता है। जिसका गौरव और सम्मान करना चाहिए, उसे हर वक्त पैरों की जूती के समान माना जाता है।

नारी के संबंध में प्रेमचंद कहते है - ''सत्य की एक चिनगारी असत्य के एक पहाड को भस्म करती है। स्त्री पुरूष से उतनी ही श्रेष्ठ है, जितना प्रकाश अँधेरे से। पुरूषों की रची हुई इस संस्कृति में स्नेह कहा है, सहयोग कहा है।''

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।''

माँ के रूप में नारी हमें जन्म देती है, अपने स्तनपान से हमे तुष्ट-पुष्ट करती है। हमारा पालन पोषण करके बडा करती है। बहन के रूप में नारी आजन्म हमारी सुख-समृद्धि की मंगल कामना

करती है। युवावस्था में पत्नी के रूप में सांसारिक सुखों का आस्वादन ही नहीं करती अपितु सुख-दु:ख में पुरूष की सहचरी होती है। वृद्धावस्था में सेवा सुश्रूषा में जी जान लगा देती है। किंतु क्या नारी को इसका यथेष्ट प्रतिदान मिलता है ? कदापि नहीं।

मध्ययुगीन धर्मशास्त्रियों ने स्त्रियों को अबला मानकर उन्हें अत्याचारों का शिकार बनाया है। उन्हें अपने अधिकारों से वंचित रखा है। 'देवी', 'पतिव्रता', 'गृहलक्ष्मी' जैसी उँची पदवियों से विभूषित करते हुए अपना स्वार्थ सिद्ध किया है। इस संदर्भ में डॉ.कमला गुप्ता का कथन है -

''पुरूष ने नारी को देवी, लक्ष्मी जैसे विशेषणों से विभूषित कर उसे पुष्पों की बेडियाँ पहना दी, जिससे वह कभी उन्नति के मार्ग पर बढने की सोच भी न सके और वह पुरूष की दासी उसी की बनी रहे।''[1]

जिस नारी ने पुरूष को अपना सबकुछ माना, पुरूष के लिए आत्मसमपर्ण किय , वह पुरूष की भोग्य मात्र रही है। अपनी भोग्या के प्रति पुरूष सदैव से दायित्वहीन रहा है। पुरूषोंद्वारा किए गए अनाचार और दुराचार के लिए यह सुविधा प्राप्त नहीं है।

आज की नारी के सम्मुख जो समस्याएँ दृष्टिगत होती है, उनमें से अनेक आज से शताब्दियों पूर्व भी थी। किंतु तब की नारी के लिए वे समस्याएँ, समस्याएँ न होकर नारी धर्म था

धर्म मार्तडों के विधि विधान और पुरूष प्रधानता के कारण ही युगों-युगों से नारी का शोषण विविध रूपों में हुआ है। कहीं नारी पुरूष की क्षुधा शांति का साधन है, तो कहीं उसके राजनैतिक उद्देश्यपूर्ति का साधन, तो कहीं साधना या मुक्ति के मार्ग की बाधा - कुछ भी हो शोषण के रूप पृथक्-पृथक् होते हुए भी मूलभाव एक ही है - नारी साधन है साध्य नहीं। ''भारतीय समाज में चाहे हिंदु हो या मुस्लिम - नारी की स्थिति अत्यंत दयनीय रही है।''[2] पुरूष प्रधान संस्कृति में नारी को अमानुष व्यवहार और अमानवीय रीतियों को झेलना पडता था। अत: इसका परिणाम यह हुआ कि पुरूष को अनेक विवाह करने की छूट मिल गयी, और नारी के लिए पातिव्रत्य धर्म की परीक्षा के लिए 'सतीप्रथा'। जिससे भारतीय समाज में नारी को बहुत पीडित रहना पडता, अछूत वर्ग से बहुत अधिक घिनौना व्यवहार नारी के साथ होता रहा।

---

1. **डॉ. कमलावती प्रकाश - महासमरोत्तर हिंदी उपन्यासों में जीवन दर्शन, पृ. 47**
2. **डॉ. दिलीप भस्मे - नागार्जुन के आँचलिक उपन्यास, पृ. 48**

अलका सरावगी के उपन्यासों में नारी के जीवन को ग्रस्त करने वाली अनेकानेक समस्याएँ उभरकर आयी है। लेखिका ने अपने उपन्यासों में कई समस्याओं को सामने लाया है। साथ ही समाज के अत्याचारों के खिलाफ लडने वाली तथा अत्याचारों के खिलाफ डटकर अपना जीवन नये सिरे से बसाने वाली नारियों का भी चित्रण किया है।

3.1 नारी जीवन की समस्याएँ :-

3.1.1 शोषण की समस्या :-

समाज में नारी-शोषण की समस्या अति प्राचीन है। नारी सदैव से पुरूषों की अधीनस्थता और अत्याचार को झेलने के लिए विवश रही। भारतीय समाज में नारी की स्थिति, वैदिक काल से ही पीडित व शोषित रही है। मध्यकाल में उसकी स्थिति अधिक दयनीय बनी। विदेशी आक्रमणकारियों के अत्याचारों से वह उत्तरोत्तर अधिक से अधिक दासता के बंधन में जकडती गई। समाज द्वारा नारी पर जो प्रतिबंध लगे, उनका लक्ष्य नारी की सुरक्षा था। मध्यकाल से नारी अपने सीमित सामाजिक अधिकारों के साथ घर के भीतर सिमटी रही। उसका रूप केवल सेविका, परिचारिका एवं भोग्या ही था। वह अशिक्षा, अज्ञान, अंधविश्वास तथा धार्मिक रूढियों का शिकार थी। उसका जीवन केवल बंदिनी का ही जीवन था। उसे ही सारी सामाजिक विसंगतियों को सहना पडता था। वह पूर्णत: पराश्रित थी, उसका कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं था। 'कोई बात नहीं' इस उपन्यास में शशांक की दादी माँ शादी के बाद अपने पति के या घर के किसी भी सदस्य से खुलकर बात तक कर नहीं सकती थी। शशांक को अपनी जीवनगाथा हमेशा बताती रहती। जिस कमरे में वह सोती थी उस कमरों को पार करके जाने के लिए बहुत कठिनाइयाँ थी। क्योंकि अकेले सास-ससूर के सामने जाना मना था। ''पंद्रह साल की उमर में शादी होकर जो कमरा उसे दिया गया, वहाँ से चौके तक जाने के लिए बीच में पडता दादी के सास-ससुर का बडा कमरा। उस पार चौके तक जाना हो, तो बीच में 'बडा कमरा' पार करना पडता और इस पार अपने कमरे में आना हो, तो 'बडा कमरा' पार करना पडता।''[1]

इस तरह शशांक की दादी माँ को एक शोषित एवं प्रताडित जीवन जीना पड रहा था। न वह अपने पति से शिकायत कर सकती थी न कुछ बोल सकती थी। चुपचाप सभी सहन करते रहना बस। दादी माँ ने एक बार बरामदे से झाँकते हुए बाहर देखा तो उसे कितनी बातें सुननी पडी थी।

---

1. अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृ. 31

''एक बार बुढऊ जी मतलब मेरे दादा-ससुर ने बरामदे से सडक की तरफ झाँकते देख लिया, तो एकदम मेरी घेंटी, मतलब गरदन पकड ली और बोले एक खसम से जी नहीं भरा क्या ?''[1] इस बात को सिर्फ सुनकर चुपचाप सहना यही दादी माँ का काम था, बोले तो डंडा लेकर मारने दौडते थे। इस तरह नारी को जंजिरों से जकडे रखा गया था। मानसिक तनाव नारी के व्यक्तित्व को नष्ट कर देते है, उसी प्रकार दादी माँ के साथ हुआ।

नारी जागरण के बाद भी आज भारतीय नारी शोषण के अनेकों रूपों को सह रही है। पुरूष सदैव नारी पर आसक्त रहा है। फलत: नारी को भोग्य वस्तु समझने की उसकी मनोवृत्ति, मध्ययुगीन मानसिकता की याद दिलाती है। भारतीय समाज में स्त्री को पत्नी, बहू, माता आदि रूपों में, अनेकों दायित्वों का निर्वाह व्यक्तिगत सुखों और सुविधाओं के बदले में करना पडता है। 'शेष कादम्बरी' उपन्यास की नायिका 'रूबी गुप्ता' कार्यकुशल और धैर्यवान स्त्री है। जो तरह-तरह की दुखियार, जमाने की मारी, बेचारी औरतों के लिए परामर्श नामक संस्था चलाती थी। पर किसके लिए यह कमाना और किसके लिए जीना ? वह मानसिक रूप से बहुत टूट गयी थी। 'शेष कादम्बरी' की सविता जो अपने पिता के अत्याचार से शोषित प्रताडित हुई है। वह रूबी गुप्ता के यहाँ न्याय माँगने के लिए आयी है। सविता के पिता अपनी बेटी को बेटी मानने से इन्कार कर देते है। ''लडकी, किसकी लडकी ? कौन बाप ? मेरा कोई संबंध नहीं है इस लडकी से?''[2] सविता मौसी को यह सुनकर बहुत दुख होता है। सविता की व्यथा रूबी दी सुन रही थी। इसी शोषण ने स्त्री समाज को व्यापक बना दिया है।

अत: इसी शोषण के कारण स्त्रियाँ कष्टमय स्थितियों से गुजर रही हैं। स्त्रियों की ये समस्याएँ जो उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व के विकास के लिए घातक है, समाज में बडे व्यापक रूप से फैली है। 'शेष कादम्बरी' की रूबी गुप्ता को शादी के पहले दिन ही उसकी सास प्रताडित कर देती है। रूबी गुप्ता को शादी से पहले दूध पीने की आदत थी। जब वह सुबह चाय के समय यह कहती है कि 'मैं चाय नहीं पीती' अचानक उसकी सास कडकदार स्वर में कहती है कि ''सुन बहू, हमारे घर में सब चाय पीते हैं। दूध-रस पीना हो, तो अपनी बाप के घर चली जा।''[3] इस प्रकार एक औरत भी दूसरी औरत पर अत्याचार करती है। रूबी गुप्ता को उसके परिवारवाले प्रेम, स्नेह नहीं करते थे। इसलिए

---

1. **अलका सरावगी - कोई बात नहीं, पृ. 31**
2. **अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृ. 62**
3. **वही, पृ. 76**

एक दिन अपने पति से वह पूछती है कि, ''तुम्हारे परिवार के लोगों के मन में मेरे प्रति प्रेम क्यों नहीं है?''[1] तब उसका पति जवाब में सारी सच्चाई बता देता हैं। यही सच्चाई उन्हें वह दोष लग रहे थे। सुधीर कहता है - ''तुम्हारा पहला दोष यह है कि तुम पढ़ी-लिखी हो। औरों की तुलना में तुम अलग हो। दूसरा दोष यह है कि तुम्हारे पास अपना पैसा है, जो और किसी के पास नहीं है?''[2] इस प्रकार एक औरत पढ़ी-लिखी हो तो समाज उसे दोषी मानता है। वह स्वयं के पैरों पर खडी हो तो वह भी उसका दोष है।

अत: शोषण की उपरोक्त स्थितियों ने स्त्री समाज को व्यापकता से प्रभावित किया है। जीवन स्त्री का अपना है। उसके माता-पिता, भाई अथवा पति का नहीं। स्त्री ने स्वयं उसे इतने हिस्सों में बाँटा, इतनी दुविधाओं में विभक्त किया है कि वह अपने जीवन को आखिरकार अपना नहीं बना पायी। दूसरों के प्रेम और द्वेष, उसे नियंत्रित कराते है। अपने आपको नियंत्रित करने का अधिकार उसमें शेष नहीं रहा। कानून और वैधानिक सुरक्षा, बाहर से बहुत सुंदर दिखाई देते है, किंतु वास्तव में नारी को इस व्यवस्था से कोई लाभ प्राप्त नहीं हो रहा है।

3.1.2 वेश्या समस्या :-

'वेश्या' शब्द का अभिप्राय उन स्त्रियों से है जिनको पैसे देकर स्वच्छंदतापूर्वक कोई भी व्यक्ति भोग सकता है। या अपने सौंदर्य, यौवन और कला-कौशल के बल पर अपना शरीर बेचकर धन कमाने वाली स्त्री को वेश्या कहा जाता है।

किसी भी समाज में स्त्रियाँ वेश्यावृत्ति जैसे घृणित एवं जघन्य व्यवसाय में विषम सामाजिक परिस्थितियों के कारण ही प्रवृत्त होती है। वे इस वृत्ति में सदैव हीनता व ग्लानि का अनुभव निरंतर करती रहती है। सभ्य समाज में उनका प्रवेश निषिद्ध होता है। वेश्या स्त्रियों का जीवन शोषण तथा अत्याचार से भरपूर होता है। उन्हें किसी भी प्रकार के सामाजिक अधिकार प्राप्त नहीं होते। सम्माज में वेश्या व्यवसाय को प्रोत्साहित करनेवाले पुरूष ही होते है।

भारतीय समाज में वेश्या की सत्ता प्राचीन काल से ही रही है। ऋग्वेद, धर्म सूत्रों और स्मृति ग्रंथों, पुराणों में वेश्याओं के विषयों पर पर्याप्त विवेचन उपलब्ध है। केवल भारत में ही नहीं, विश्व के अन्य भागों में भी अत्यंत प्राचीन काल से ही इस प्रवृत्ति का प्रचलन मिलता है।

---

1. **अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृ. 77**
2. **वही, पृ. 78**

साधारणत: यह माना जाता है कि वेश्या कभी सुधर नहीं सकती। क्योंकि वेश्या का जीवन पतित होता है, वह वासना की पुतली होती है। और उसके कोठे व्यभिचार के प्रमुख अड्डे होते है। किंतु धीरे-धीरे इन मान्यताओं के स्थान नई मान्यताएँ ले रही हैं। अब मानवीय दृष्टि से वेश्या के प्रति विचार किया जा रहा है। गलित से गलित वेश्या नारी के सामूहिक अचेतन मन में भी आदर्श नारी के संस्कार संचित रहते है, जो अनुकूल परिस्थितियाँ मिलने पर उभर सकते हैं। उपन्यासकार अलका सरावगी ने 'कलिकथा : वाया बाइपास' और 'शेष कादम्बरी' इस उपन्यासों में वेश्या समस्या का भी चित्रण प्रस्तुत किया है।

'कलिकथा : वाया बाइपास' इस उपन्यास में किशोर के मामाजी जो अपनी पत्नी से हमेशा खफा रहते थे। किशोर की अपनी मामी की हमेशा फिक्र रहती थी। मामी बडे खानदान से थी। उसी के साथ सुंदर भी थी। लेकिन हर वक्त किसी न किसी बहाने से मामाजी उनसे झगडा करते और सारी रात कसबिनें के साथ गुजारते थे। ''क्या ज्यादा सुंदरियाँ होंगी, जिनके यहाँ मामाजी जाते है।''[1]

किशोर बाबू का मित्र अमोलक द्वारा वेश्याओं के पास जाने वाले उसके चाचा का किस्सा वह सुनाता है। ''रोज रात को हाथ में बेले का गजरा बांधकर, इत्र छिडककर फनाफन सफेद कुर्ता पहनकर घर से बाहर निकल जाते है।''[2] इस तरह अमोलक के चाचा हर रोज उस वेश्या को मिलने जाते है और घोडे की फिटन में बैठाकर उसे बहू बाजार से लेकर रात को विक्टोरिया-चौरंगी घुमाते है।

कोलकाता शहर व्यापार करनेवालों का शहर माना जाता है। इस कारण वहाँ पर अन्य चीजों के अलावा वेश्याओं का भी व्यापार चलता रहता है। ''युरोपियन वेश्याओं से लेकर बडी-बडी नामी मुस्लिम वेश्याएँ और बनारस की वेश्याएँ यहाँ हुई जिनके पास भारी धन-जायदार हुआ करती थी। पूरे-पूरे इलाके वेश्याओं के इलाके कहलाते थे।''[3]

इस तरह इस उपन्यास में अलका जी ने वेश्या समस्या को हमारे सामने लाने की कोशिश की है। इस उपन्यास की मुख्य पात्र रूबी गुप्ता - यह एक 'परामर्श' संस्था चलाती है। इसी संस्था का विज्ञापन देखकर रूबी दी के संस्था में आयी थी। उसका नाम था माया बोस, जो दसवीं क्लास पास है। नैहाटी रिटायर्ड स्कूल मास्टर की वह बेटी है। लेकिन उसका क्षेत्र वेश्या समाज है। उसने मास्टरजी को बताया था कि वह कास्मोपोलिटन नर्सिंग होम में काम करती है। वहाँ हमेशा नाइट

1. **अलका सरावगी - कलिकथा : वाय बाइपास, पृ. 66**
2. **वही, पृ. 70**
3. **वही, पृ. 70**

ड्युटी होती है। ''जब नैहाटी की तमाम औरतें सुबह मुँह-अँधेरे उठकर कोलकाता जाने के लिए 'झी' (दाई) स्पेशल लोकल ट्रेन पकडती है, तो वह सादी, सूती, ताँत की साडी में शहर से कस्बे के लिए स्टेशन पर आकर ट्रेन पकडती है। सारी दुनिया सोती है और मास्टरजी की माया जागती है। सारी दुनिया उठती है, तब माया के सोने का समय हो जाता है। उसके बैग में सबसे उपर एक नर्स की ड्रेस है। अन्दर क्या है, यह कभी मास्टरजी ने देखने की कोशिश नहीं की।''[1] इस सबसे मन में एक शक उत्पन्न होता है। माया क्या कर सकती है ? इतनी पढी-लिखी भी नहीं की नर्सिंग की ट्रेनिंग करे और इतनी अनपढ भी नहीं कि घरों में बर्तन माँजे। वह शादी भी करना नहीं चाहती थी। माया बोस ने सारी बातें रूबी दी को बता दी थी। रूबी दी के हमेशा यह समझ में नहीं आता कि मास्टरजी माया के हाथ का खाना भी नहीं खाते तो उनकी कौन-सी जरूरत उसके पास आकर पूरी होती है ? माया बोस और रूबी गुप्ता दोनों की एक ही जात है औरत जात। लेकिन दोनों में कितना अंतर है। माया बोस अपने वेश्याजीवन का तिरस्कार करती है। ''दुनिया हमारा तिरस्कार करती है - वेश्याओं का , क्यों ? दस साल पहले, मैं जींस-टी-शर्ट पहनकर शहर के सबसे नामी कॉलेज में बाहर बैग लेकर खडी होती थी। कॉलेज की दूसरी लडकियों के साथ। लडके उठाते उन लडकियों को गाडी में।''[2] इस प्रकार माया बोस उस वेश्या बाजार में उतरती चली गयी। माया बोस रूबी दी के पास दो सालों से आ रही थी। लेकिन उसने एक सच रूबी दी से छुपाया था जो वह अंत में बता देती है। ''आठ साल की उम्र में मेरा जीवन नष्ट किया, उस आदमी ने, कोई और नहीं, एकदम करीबी रिश्तेदार है वह। घर में रहनेवाला साँप। मैंने शादी कर ली, तो साँप को कौन पालेगा ? और मुझे उसने विषकन्या बना दिया रूबी दी। मैं क्या किसी के लायक रह गई ?''[3] और आखिर में माया बोस ने सच बता दिया - ''और कौन रूबी दी, मास्टरजी, रूबी दी मास्टरजी। आपको यह कथा मालूम है कि सृष्टिकर्ता ब्रह्मा अपनी पुत्री सरस्वती पर मुग्ध हो गए थे। थोडा पानी पीएँगी रूबी दी।''[4] इस बात से रूबी दी होशो हवास खो बैठती है। क्या एक बाप भी इस तरह गिरी हुई हरकतें कर सकता है ?

3.1.3 अकेलेपन की समस्या :-

आधुनिक युग में शिक्षा ने स्त्री को अपने अस्तित्व व व्यक्तित्व की पहचान करायी। आज की शिक्षित स्त्री अपनी दुर्दशा के प्रति अधिक सजग हो उठी है। स्त्री को शादी के बाद जब अपने

---

1. **अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृ. 61**
2. **वही, पृ. 64**
3. **वही, पृ. 66**
4. **वही, पृ. 66**

पति से अलग रहना पडता है तब वह रह नहीं पाती। 'कलिकथा : वाया बाइपास' में किशोर बाबू के मामा विदेश में बसे हुए है, लेकिन शादी के बाद मामी को अकेला ही रहना पडता है। जब कि उनके हाथों की मेहंदी फीकी भी नहीं हुई है। इस तरह शादी होने पर भी मामी को अकेलापन महसूस होता है।

आर्थिक स्वतंत्रता ने नारी को अपने स्वाभिमान के प्रति जागृत किया है। 'शेष कादम्बरी' की नायिका रूबी दी को अपने पति की मृत्यु के बाद इतना अकेलापन महसूस होता है कि उसे दुनिया भर का अकेलापन आया हो ऐसा लगता है। ''दुनिया और अपने होने की समझ के साथ-साथ उपजा ठेठ अकेलापन।''[1] रूबी दी को अपने पति के रहते भी अकेलापन महसूस होता था क्योंकि पति से खुलकर बात करना या उनके साथ बैठना बुरा समझा जाता था। ''और तो और, क्या सचमुच पति के रहते भी अकेलापन नहीं था ? पर अब तो यह जीने की हर वजह को, जो वे खोज निकालती है, उसमें घुसकर उसे खोखला बना देता है।''[2] रूबी दी को अकेलापन इतना खाए जा रहा था कि वह उस अकेलेपन में कुछ नहीं कर पाती थी सिवाय यादों के। ''सबके पास, सबके साथ रहते हुए भी सबसे दूर, अपने अकेलेपन में बिना शिकायत के नितान्त अकेले रहने का स्वभाव। उन्हें अपने को किसी तरह की भावना में बहने की बेवकूफी करने की छूट नहीं देनी है।''[3] रूबी अपना अकेलापन चाय के कप पी-पीकर निकालती थी। एक सायरा ही थी जो उनका सहारा बनी हुई थी। रूबी दी की नातिन कादम्बरी रूबी दी को एक सुझाव देती है, कम्प्युटर खरीदने का । और रूबी दी को अपने -आप में एक लगाव हो जाएगा। इस तरह अकेलापन दूर करने के लिए किन-किन चिजों का सहारा लेना पडता है। मनुष्य मनुष्य में अंतर बढ गया और इसलिए उसे यह अकेलापन अब खाए जा रहा है।

3.1.4 बलात्कार की समस्या :-

भारतीय समाज में नारी का जीवन अत्यंत दु:खदायी रहा है। पुरूष अपनी इच्छानुसार नारी का भोग वस्तु के रूप में उपयोग करना चाहता है। यदि बलात्कार एक घिनौना सामाजिक और नैतिक अपराध है। पुरूष की वासना की शिकार नारी कभी-कभी जीवन पर्यंत इस अपराध से निकल नहीं पाती। सारा जीवन वह इसी मानसिक यंत्रणा की शिकार रहती है, जो उसे सहज

---

1. **अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृ.11**
2. **वही, पृ. 11**
3. **वही, पृ. 59**

सामाजिक जीवन जीने में बाधा उत्पन्न करता है। उसका व्यक्तित्व कुण्ठित हो जाता है। नारी पर यह एक अत्यंत भयावह और घिनौना शोषण है। नारी इच्छा के विरोध में होनेवाले अत्याचार को ही बलात्कार कहते है। बला का प्रयोग करने में यदि पुरूष असफल बन जाता है तब वह नारी को अन्य प्रकारों से पीडा देता रहा है।

'कलिकथा : वाया बाइपास' में चित्रित अकाल समस्या को लेकर भयंकर परिस्थितियाँ बनी हुई थी। अकाल पडने के कारण कई परिवार जहाँ सहारा मिले, खाना मिले वहाँ जाकर डेरा जमाते थे। अमोलक और किशोर बाबू में अकाल की स्थिति को लेकर बाते हो रही है। और उसी में द्वितीय महायुद्ध में अमेरिकन सैनिकों ने घेर रखा था। दोनों पुराने शिरीष के पेड के नीचे बैठ जाते और वहाँ पर अमोलक कोलकते की सडकों पर जो स्थिति बनी हुई है, उस अकाल की स्थिति का किस्सा सुना रहा है। अमोलक के पिताजी के मित्र सम्पत चाचा उन्होंने देखा था कि बंगाल के गाँवों में लोगों के पास खाने के लिए कुछ भी नहीं है। अपने सभी बर्तन बेचकर ये लोग चावल खरीदकर खा चुके है। इसी भूख के मारे गाँव छोडकर कोलकाता आ गए है। अमोलक के घर के पास ही एक परिवार ने डेरा डाल रखा है। उस परिवार के बाप और बेटा रोज भीख मांगकर लाते है। माँ और बेटी वही बैठी रहती है। एक दिन बाप अपनी बेटी को भीख माँगने के लिए कहता है, लेकिन बेटी को तन ढंकने के लिए कपडा नहीं तो वह भीख माँगने कैसे जाएगी ? इस बात को सोचकर अमोलक और किशोर उन्हें कपडे देने की सोचते है। किशार ने उस लडकी को देखा था। अपनी गरीबी और भुखमरी के बावजूद लडकी में एक अजीब-सा सलोनापन था, जिसकी तरफ आँखे गए बिना नहीं रहती थी। किशोर के मन में उस लडकी को लेकर बहुत डर लग रहा था, कहीं लोग इस पर घात कर न बैठे। दूसरे महायुद्ध में पार्क स्ट्रीट की तरफ अमेरिकन सैनिकों को एंग्लो-इंडियन लडकियों के गले में हाथ डालकर सटाए घूमते देखा था। उसी प्रकार शहर में ऐसा माहोल बन गया था कि चार-पाच साल की लडकियों तक से बलात्कार करने की घटनाएँ हुई थी। इस घिनौनी हरकत को मिलिट्री पुलिस ने रोकने की कोशिश की थी। कितनी लडकियों को भूख के कारण अपने आप को बेचना पडा। इस तरह के कई किस्से है जो स्त्री को अपना शरीर बेचना पडता है। यह सब भूख को मिटाने के लिए न की पैसे के लिए। ''कितनी लडकियों ने अपने आप को इसलिए बेचा कि उनके पेट की भूख उनकी अंतडियों को खाने लगी थी।''[1] इस तरह अलका जी ने अपने उपन्यास में बलात्कार जैसी

---

1. **अलका सरावगी - कलिकथा : वाया बाइपास, पृ. 144**

समस्या को हमारे सामने लाकर यह साबित किया है कि स्त्री को न जाने कितनी मुसीबतों का सामना करना पडता है। इस मुसीबत को टालने के लिए अपने शरीर को आगे करना पडता है वह भी मन के खिलाफ।

3.1.5 नारी शिक्षा समस्या :-

वैदिक काल में नारी को पुरूष के समान शिक्षा लेने का अधिकार था। इस काल में मैत्री गार्गी, आदिति आदि विदूषियों के उदाहरण दिखाई देते हैं। नारी शिक्षा का यह अधिकार परवर्ती काल में धीरे-धीरे छीन लिया गया। मध्ययुगीन काल में नारी को 'भोग्या' तथा 'दासी' कहा जाने लगा। वैसे ही उस पर धर्म के नाम पर पातिव्रत्य के जितने भी बंधन लादे गये वैसे ही उसका शिक्षा लेना भी, पाप कर्म माना जाने लगा, इसी कारण उसका जीवन बंधन और अज्ञान के साथ चार दीवारों में केवल बालबच्चों की निगरानी के लिए और रसोई घर के कामों में बंद होता गया। नारी के अज्ञान और आर्थिक परावलबंन के कारण उसका शोषण होने लगा।

समाज सुधारकों के नारी जागरण, नारी स्वावलंबन तथा नारी शिक्षा के संबंध में कार्य करने के बावजूद आज भी हमारे समाज में लडकियों का पढ़ना-लिखना उचित न मानने वालें की संख्या अधिक है।

अलका सरावगी ने अपने उपन्यास 'कलिकथा : वाया बाइपास' में नारी शिक्षा समस्या का चित्रण किया है। इस उपन्यास के नायक किशोर बाबू की पत्नी ज्यादा पढी-लिखी नहीं है। उन दिनों कोलकाता में दो ही स्कूल थे। उन दिनों लडकियों के मामले में तो सभी विचार एक ही थे। लडकियों को कम पढाया-लिखाया जाय। लेकिन किशोर की शांता भाभी इसके लिए अपवाद थी। वह ज्यादा पढी लिखी थी। कोलकाता में लडकियों को ज्यादा पढाना सोचा ही नहीं जा सकता था। किशोर बाबू की नानी तो कहती है कि, ''ज्यादा पढाने से लडकी विधवा हो जाती है।''[1] इस तरह पुराने विचारों के कारण नारी शिक्षा से वंचित रहती थी। किशोर बाबू की पाँच लडकियाँ है। इन्होंने पाँचों लडकियों को कॉलेज तक भेजा। लेकिन उनमें से दो ही बी. ए. तक की पढ़ाई पूरी कर सकी। बाकी तीनों की बीच में ही शादी हो जाती है। किशोर बाबू की छोटी लडकी पढ़ने में तेज है और जिद्दी भी है, पर किशोर बाबू उसकी इच्छा को दबाकर उसे घर में बिठाते है। उनका कहना है कि,

---

1. **अलका सरावगी - कलिकथा : वाया बाइपास, पृ. 158**

''ज्यादा पढ़ लेती तो ज्यादा पढ़े-लिखे लडके की जरूरत होती। आखिर संभालनी तो घर-गृहस्थी ही है लडकियों को, कोई हुंडी का भुगतान थोडे ही करना है।''[1] इस प्रकार किशोर बाबू अपनी लडकियों को ज्यादा पढ़ाने की चाह तो रखते है लेकिन उन्हें घर गृहस्थी में ही समेट लेना चाहते है। ज्यादा पढ़ी-लिखी तो उन्हें उसी प्रकार के लडकों की जरूरत होगी। ''ज्यादा पढ़ी हुई लडकियाँ किशोर बाबू को हमेशा मर्दानी-सी लगती है - पता नहीं, क्यों उनमें कोमलता गायब हो जाती है।''[2] इस तरह किशोर बाबू को जो लडकियाँ पढ़ी हुई होती है, वह मर्दान याने लडकों जैसी लगती है। उनमें जो कोमलता होती है वह पढी-लिखी लडकियों में नहीं होती। वह लडकियों को हमेशा घर की चार दीवारियों में ही बाँधकर रखते थे। उनका कहना था कि ''पिंजरे के पंछी को जन्म से ही पिंजरे में रखा जाए तो कष्ट नहीं मानता। पर एक बार खुले आकाश में छोडकर पिंजरे में बंद कर दे, तो वह अपना खाना पीना छोड देता है।''[3] लडकियों को पराए घर जाना है, घर-गृहस्थी संभालनी होती है, ज्यादा पर निकल आए तो मुसीबत हो जाएगी ऐसा किशोर बाबु का मानना था। इससे स्पष्ट होता है कि नारी शिक्षा के प्रति होने वाले सनातन विचार और मान्यताओं के कारण किशोर बाबू की लडकियों को पढाई-लिखाई से दूर रहना पडता है।

3.1.6 विधवा समस्या :-

भारतीय नारी के लिए वैधव्य एक भारी अभिशाप है। धर्म और शास्त्रानुसार हिंदू नारी को एक बार ही विवाह करने का अधिकार मान्य होने के कारण उसे वैधव्य जीवन में कठोर संयम का पालन करना अनिवार्य माना गया है। नारी का वैधव्य उसके पूर्व जन्म के पाप का फल है, तथा विधवाएँ अशुभ और अपशकुनी भी मानी जाती है। जिससे वह धर्म कार्य तथा शुभ कार्य में उपस्थित नहीं रह सकती। इस संदर्भ में बाबूराम गुप्त ने कहा है - ''विधवा जीवन के प्रति समाज का दृष्टिकोण परंपरावादी, दकियानुसी और अवमाननापूर्ण रहा है। चाहे समाज में उसे दीनहीन, कष्टपूर्ण जीवन के लिए मौखिक सहानुभूति प्रदर्शित करे, लेकिन परोक्ष में क्रूर व्यंग्य और प्रताडना ही उसके जीवन को और अधिक त्रासद बना देते है।''[4]

---

1. **अलका सरावगी - कलिकथा : वाया बाइपास, पृ. 158**
2. **वही, पृ. 158**
3. **वही, पृ.**
4. **बाबूराव गुप्त - उपन्यासकार नागार्जुन, पृ. 78.**

जिससे हिंदू विधवा के जीवन में सुख के क्षण की भी कल्पना नहीं की जा सकती, वह एक ठूँठ की तरह होती है, जिस पर कभी हरियाली नहीं आती, कभी फलफूल नहीं लगते और उसका अस्तित्व धरती का बोझ हो जाता है। ऐसी एकांकी असहाय विधवा के लिए मान सम्मान पूर्ण जीवन जीना प्राप्त नहीं होता। उस पर उठने-बैठने, बात करने, सोने और जागने तक की सभी बातों पर निगरानी रखी जाती है और सदैव संदेह और शंका की दृष्टि से देखा जाता है। इस पर डॉ. कमल गुप्ता का कहना है - "विधवा जीवन के प्रति सहन की दृष्टि सदैव ही परंपरावादी रही एवं विधवा को समाज से अवमानना और प्रतारणा ही मिलती रही। समाज कभी भी उसके स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकार नहीं कर सका।"[1]

कम उम्र में वैधव्य प्राप्त नारियों को अपने नाते रिश्तेदारों के आश्रय में ही रहना पडता है। यदि रिश्तेदार नेक चलन होते है तो उस नारी को विशेष कष्ट नहीं होता, परंतु जब परिवार के व्यक्तियों की सहानुभूति और संवेदना पाने के स्थान पर विधवा नारी दुर्व्यवहार पाती है तब निरूपाय अवस्था में उसे मार्ग में भटकना पडता है।

भारतीय समाज में वैधव्य की स्थिति एक अभिशाप है। समाज ऐसी स्त्रियों को किसी भी प्रकार के अधिकार नहीं देता। स्त्री के इस अभिशप्त जीवन का करूण एवं मार्मिक चित्रण प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में मार्मिक ढंग से किया। प्रतिज्ञा, वरदार, निर्मला आदि उपन्यास इसके श्रेष्ठ उदाहरण है।

विधवाओं की समस्याओं को लेकर ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने बंगाल में तथा जस्टिस रानडे और नटराज ने मुंबई में विधवा विवाह के प्रश्न को उठाया था। इन्हीं समाज सुधारकों के प्रयत्नों के कारण विधवा विवाह जायज माना गया है। परंतु भारतीय समाज प्राचीन परंपराओं, रूढियों को तोडने में असमर्थ रहा है, जिससे आज भी, हम सभ्यता के क्षेत्र में प्रगतिशील मानते हुए भी समाज में विधवा का जीवन दयनीय रूप में देख सकते हैं। ग्रामीण समाज में इन विचारों की संकीर्णता और भी गहन रही है।

'कलिकथा : वाया बाइपास' में किशोर बाबू के भाई ललित की मौत हो जाती है। किशोर बाबू की भाभी विधवा हो जाती है। किशोर बाबू को अपने भाभी की बहुत फिक्र थी, कद्र थी। उन्हें

---

1. **डॉ. कमला गुप्ता - हिंदी उपन्यासों में सामंतवाद, पृ. 383.**

अपने भैय्या गुजर जाने का दु:ख था ही लेकिन वह अपने भाभी को सफेद साडी में देख नहीं पाते थे। किशोर बाबू से शिकायत करते है। तब उनका मित्र शांतनु इनके विचारों को या इनके ईश्वर मानने के मत से झल्ला उठते है। शांतनु कहना चाहता है कि तुम अपने आपको ही ईश्वर मानो। शांतनु किशारे को भाभी की दूसरी शादी करने के लिए कहता है। ''तुम्हें शांती भाभी की फिर से शादी करनी है। यह बींसवी शताब्दी है, माई डियर। नाइन्टीन हन्डरेड एंड फोर्टी।''[1] शंतनु किशोर को अपने आधुनिक विचारों से भाभी को सहानुभूति देने की कोशिश करता है। किशोर बाबू को अपने भाभी के प्रति इतना स्नेह होकर भी उनकी दूसरी शादी की बात से उनके मन में कई विचार उत्पन्न होते है। ''कैसे होगा यह ? माँ, बडे मामा, बडे चाचा, भाभी के पिता - सबका चेहरा उसके सामने बारी-बारी से घूम गया। हमारे कुल में कभी ऐसा नहीं हुआ। क्या कुल की मर्यादा को इस तरह तोडा जा सकता है ? बातें करना एक बात है असली जिंदगी दूसरी बात है।''[2] इस तरह बीसवीं सदो में भी एक विधवा को अकेली जिंदगी काँटना ही बेहतर समझा जाता है।

'शेष कादम्बरी' इस उपन्यास की नायिका रूबी गुप्ता का विवाह सुधीर गुप्ता से हो जाता है। रूबी गुप्ता एक पढी-लिखी औरत है, शादी के दूसरे ही दिन चाय पीते समय, रूबी गुप्ता को घर के लोगों का सामना करना पडता है, रूबी दी को चाय के बदले दूध पीने की आदत थी, लेकिन रूबी दी की सास उसे कडकदार स्वर में कहती है कि दूध पीना है तो अपने बाप के घर चली जाना। सुधीर हमेशा रूबी को घरवालों को सँभलकर लेने के लिए कहते है। सुधीर को दिल की बीमारी हो जाती है। इसके कारण कई महिनों तक उन्हें बिस्तर में ही पडा रहना होता था। इस बीमारी में सुधीर की मौत हो जाती है। रूबी दी को बहुत बडा सदमा पहुँचता है। शादी के बाद सुधीर से दो बातें भी करना बहुत कठिन था। दोनों कभी बातें करते तो घर के लोग उन्हें ताने देते। सुधीर के जाने के बाद उसकी दोनों लडकियाँ भी उसे छोडकर विदेश चली जाती है। रूबी दी अकेली पड जाती है। विधवा स्त्री का जीवन उसे बहुत सताता है, लेकिन वह पढी-लिखी होने से उसने एक ऐसी संस्था को चलाना चाहा जहाँ स्त्री को पनाह मिले, उसे न्याय मिले। 'परामर्श' नामक संस्था में रूबी दी ने अनेक दु:खी, निरपराध स्त्रियों को न्याय देने की कोशिश की है। रूबी दी की एक ही नजदीक की रिश्तेदार है - कादम्बरी, जो हर वक्त उसके साथ फोन पर बाते किया करती है और उसी से उसका

---

1. **अलका सरावगी - कलिकथा : वाया बाइपास, पृ. 17**
2. **वही, पृ. 17**

मन हलका हो जाता है। अपना काम निपटने के बाद रूबी दी को हमेशा पुरानी यादें सताती थी। एक अकेली औरत अपने यादों के सहारे अपना जीवन नातिन और नौकरानी सायरा के नाम पर देती है। ''रूबी दी वसीयतनामें पर हस्ताक्षर कर वापस आकर लेटी, तो रात का अंतिम सिरा बाकी था। उन्हें लगा कि अभी वे इसी क्षण मर जाएँ, तो कहा जाएगा कि वे अंत में हृदय में संतोष लिए मरी।''[1]

इस तरह रूबी दी अपनी सभी जायदाद के साथ जो किताब लिख रही थी वह भी आगे शुरू रखने के लिए कादम्बरी से कहती है। इस प्रकार एक विधवा नारी को अपनी जिंदगी में कोई महत्त्व नहीं देता। न बच्चे, न घर के अन्य सदस्य।

3.1.7 वैवाहिक जीवन में तनाव की समस्या :-

पुरूष प्रधान संस्कृति के कारण विवाह विषयक जो भी प्रकार प्रचलित हो गये हैं, उनमें पुरूष की इच्छा तथा भावना को अधिक स्थान रहा है। परिणामस्वरूप अनमेल विवाह, बहु विवाह तथा जरठ विवाह आदि कुप्रथाओं का प्रचलन होता गया। नारी को 'मनुष्य' नहीं 'वस्तु' मानकर ही उसका विवाह कभी निर्धनता के कारण, कभी दहेज के कारण, तो कभी उच्च कुलीनता के कारण अयोग्य पति से होता रहा। जिसके कारण वैवाहिक जीवन में तनाव निर्माण होता है।

इसका चित्रण 'शेष कादम्बरी' उपन्यास में मिलता है। प्रस्तुत उपन्यास की मुख्य पात्र रूबी गुप्ता एक पढी लिखी नारी है। विवाह जीवन के सभी मायने वह जानती है। लेकिन सुधीर के घर वाले याने रूबी दी के ससुरालवाले रूबी दी को हमेशा ताने देना, उससे झगडा करना इसके कारण सुधीर और रूबी में बहुत अंतर आ गया था। रूबी दी और उसके पति को एक साथ बैठने की इजाजत नहीं थी। सुधीर एक शांत स्वभाव के व्यक्ति थे। कम बोलना जितना महत्त्वपूर्ण है उतना ही बोलना यह उनकी आदत थी। ''रूबी दी के मन में आया कि सुधीर से अब वे जितना लगाव महसूस करती हैं, उनके मरने के पच्चीस साल बाद वैसा शायद उनके जीते-जी महसूस नहीं कर पाई।''[2] इस प्रकार रूबी दी का जीवन संघर्षमय बन गया था। सुधीर को भी रूबी दी का पढा-लिखा होना बाज नहीं आता था। इसलिए एक दिन रूबी दी सुधीर से पूछती है कि घरवाले मेरे साथ प्यार से बातें क्यों नहीं करते। तो सुधीर ने उसके दोषों को सामने रखकर कहा कि घरवाले तुम्हारे साथ कभी भी अच्छा बर्ताव नहीं करेंगे। रूबी दी का दोष यह था कि उसके पास पैसा था, अपने माँ-

---

1. **अलका सरावगी - शेष कादम्बरी, पृ. 199**
2. **वही, पृ. 199**

बाप का और वह पढी-लिखी थी। रूबी दी को जोर का धक्का ही लगा। यह दोष है तो अच्छाई किसे कहा जा सकता है। सुधीर भी रूबी दी को हमेशा इन्हीं दोषों के साथ देखते थे। इसलिए उन दोनों में कभी आत्मीक लगाव उत्पन्न नहीं हुआ।

इससे स्पष्ट होता है कि वैवाहिक जीवन में तनाव पैदा होने के लिए कोई भी कारण हो सकता है। जिससे पति-पत्नी दोनों में वैचारिक दृष्टिकोन बदल सकता है।

3.2 अन्य समस्याएँ :-

उपर्युक्त समस्याओं के अलावा आलोच्य उपन्यास में अन्य भी समस्याओं का उल्लेख हुआ है, जो नारी जीवन से संबद्ध है।

'कलिकथा : वाया बाइपास' में किशोर बाबू की बडी लडकी दो बच्चों की माँ है। दोनो भी लडकियाँ है, इसलिए तीसरा लडका चाहती है। तीन बार गर्भपात कर चुकी है। ''इस जमाने में बेचारी पाँच बार माँ बन गई। बच्चा आधा हो या पूरा, औरत का शरीर तो बराबर ही खराब होता है।''[1] इस प्रकार किशोर पत्नी अपने विचार प्रकट करती है, जो एक व्यथा से पूर्ण लगते है। और तिसरी बार उसने पेट से पानी निकालकर परीक्षा कराई तो लडकी ही निकली, इसलिए गर्भपात करना पडा। ''जब कि इस बार तो बच्चा पेट में इंजेक्शन से डाला था, जिसमें खाली लडका पैदा करनेवाले कीडे थे।''[2] याने कि टेस्ट ट्युब बेबी। इस आधुनिक खोज का फायदा किस तरह उठाया जाता है और वह भी एक स्त्री ही स्त्री को जन्म नहीं देना चाहती यह कितने दुर्भाग्य की बात है। किशोर बाबू की लडकी अपने माँ से कहती है कि, ''तुम्हारी तरह मुझे पाँच लडकियाँ पैदा नहीं करनी है।''[3] इस तरह माँ को टोकती है। लेकिन यह सोचने की बात है कि आधुनिक जीवन में भी पुराने विचारों की खनक दिखायी देती है। इसी प्रकार स्त्री भ्रुण हत्या का चित्रण मिलता है।

किशोर बाबू जब अपनी पाँचों लडकियों को विदा करके पराई लडकी को याने बहू को अपने घर लाते है। पुरानी धारणों को ताक पर रख देते है। उनका मन कई उडाने भरने लगा, फूंक-फूंक कर कदम धरते रहे। उनका विश्वास था कि यह लडकी छोटे से शहर से आयी है, उसे महानगर का सुख क्या होता है यह पता नहीं होगा। इसलिए उसे पूरा स्वातंत्र्य देते है। लेकिन छोटे शहर से आयी यह

---

1. **अलका सरावगी - कलिकथा : वाया बाइपास, पृ. 180**
2. **वही, पृ. 180**
3. **वही, पृ. 180**

लडकी जब कहती है कि, ''पांच सौ रूपए तो ब्यूटी सैलून में हर महीने खर्च होते है। पाँच सौ रूपए हाथ-खर्च में क्या होगा ?''[1] किशोर बाबू को यह सुनकर बहुत बडा धक्का लगा। लडकियों को तो हमेशा डाँट-धमका कर दबाते थे, लेकिन अब पराई लडकी को कैसे समझाए। किशोर बाबू को पश्चाताप होने लगा अपने किए पर। लेकिन अपने पारंपारिक पुराने सिद्धांत बदल दिए । जब बहू कहती है कि, ''कॉलेज में पढूँगी।'' ''सलवार-कुरता पहनुँगी, साडी में झंझट है।''[2] तब किशोर बाबू कुछ भी नहीं कह पाए। बाद में तो किशोर बाबू की बहू ने बिंदी लगाना ही छोड दिया। क्लबों में भी जाने लगी। इस प्रकार किशोरबाबू जो अपना घर बनाने के लिए सारी जिंदगी लगाई, उसे बहू ने मिट्टी में मिलाया।

'शेष कादम्बरी' में रूबी गुप्ता एक परामर्श संस्था चलाती है। इस संस्था में रूबी दी उन औरतों को न्याय दिलाती, जिनपर अत्याचार हो रहे हैं। जिनका छल किया जा रहा है। ऐसा ही एक केस रूबी दी के पास आता है। मटियाबुर्ज के यासीन अली की लडकी का केस था। रूबी दी दिलोजान से उस में लग गई। क्योंकि यासीन के पिता रहमान सुधीर के बंगाल इंजिनियरिंग कॉलेज के दिनों से गहरे दोस्त थे और संयोग से रूबी दी की लडकी गोरी यासीन का जन्म एक ही दिन हुआ था। यासीन ने अपनी उन्नीस साल की लडकी फरहा की शादी जिस लडके से की थी वह नामर्द निकला। शादी के छह महीने बाद लडकी ने अपनी माँ को बताया। तबसे यह परेशानी शुरू हुई। लडके की डॉक्टरी जाँच की तब भी कुछ गडबडी नहीं आयी। डॉक्टर ने कहा कि सारी समस्या वैज्ञानिक है। जब-जब उसे पति को फीट आती थी तब-तब उसके पास उसकी सास देखभाल के लिए कमरे में रहना चाहती थी। तब पता चला कि लडके के पहले कई औरतों से ताल्लुकात रह चुके है और यह सब उसी का परिणाम है। इस प्रकार फरहा दिन-ब-दिन गुमसुम हो जाती है। अपने को यह देखकर उसका मन बैठा जा रहा था। वह हर दिन कमजोर पडी जा रही थी। इससे बाहर निकलने का एक ही तरीका था तलाक। उसके पति की हालत दिन-ब-दिन बिघडती जा रही थी। वह कोई बातें बोलता था, जबकि अपने पिता की बातें भी करता था। जो मृत है। इस तरह सारे घर के सदस्य परेशान हो गए थे। आखिर में यासीन ने सबकुछ देख-समझकर निर्णय लिया कि फरहा को मायके लाया जाय लेकिन ससुराल वाले उसे मायके भेजने को तैयार नहीं थे। किसी तरह यासीन ने ममेर

---

1. **अलका सरावगी - कलिकथा : वाया बाइपास, पृ. 202**
2. **वही, पृ. 203**

भाई की शादी का बहाना बनाकर उसे अपने घर ले आया। वकील के मार्फत मुस्लिम कानून के तरह तलाक की अरजी दी गई। लेकिन अचानक फरहा का मन बदल गया। उसने तय किया कि पति के साथ ही रहेगी। उसी के साथ जिंदगी गुजारेगी। इस प्रकार एक औरत अपने पति को सभी दोषों के साथ अपनाती है। एक औरत ही या एक पत्नी ही अपने पति को समझ सकती है।

निष्कर्ष :-

1. विवेच्य उपन्यासों में अलका जी ने नारी के प्रति आस्था दिखाकर उसकी समस्या को हमारे सामने परिलक्षित किया है। अलका जी ने अपने उपन्यासों में नारी की विधवा समस्या, शोषण की समस्या, नारी शिक्षा समस्या, वैवाहिक जीवन में तनाव की समस्या आदि समस्याओं को उजागर किया है। अलका जी स्वयम् एक नारी है, इसलिए उनसे ज्यादा महिलाओं का दु:ख और कोई पुरूष नहीं जान सकता है। इसलिए अलका जी ने 'कलिकथा : वाया बाइपास' में नारी की अशिक्षा को प्रस्तुत करने की कोशिश की है। किशोर बाबू की लडकियाँ जो पढना चाहती है। लेकिन किशोर बाबू इनके पिता, उन्हें पढ़ाना नहीं चाहते। उन्हें चार दीवारियों के अंदर बिठाना चाहते हैं। उन्हें ज्यादा पढ़ी-लिखी लडकियाँ मर्दाना मिजाज की लगती है। नारी की शिक्षा को एक समस्या के रूप में अलका जी ने हमारे सामने प्रस्तुत किया है।

2. अलका जी स्वयम् एक नारी होने के नाते वह नारियों की समस्या को चित्रित करने में सफल हुई है। 'शेष कादम्बरी' में नारी के वैवाहिक जीवन में तनाव की समस्या को चित्रित किया है। रूबी दी जो इस उपन्यास की मुख्य पात्र होने के साथ-साथ एक तनाव भरी जिंदगी जीती है। पति का साथ न होने से वह सामाजिक संस्था चलाती है, और उसमें अपना दिल बहलाने का काम करती है। लेकिन जो भी केस उनके पास सुलझाने के लिए आता है, उस वक्त अपने वैवाहिक जीवन की याद हो जाती। इस तरह नारी को हर तरह से अपने वैवाहिक जीवन का दु:ख कैसे सताता है, इसे अलका जी ने रूबी दी के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

3. आलोच्य उपन्यासों के स्त्री के हर पहलूओं को सामने लाकर उसकी पीडा को अलका जी ने समझा है, जाना है, महसूस किया है। वेश्या समस्या, विधवा समस्या को इन उपन्यास में पढने के बाद इसकी गहराई और ख्वाफ महसूस होता है। वेश्याएँ जीवन में अपने जरूरतों

15886

को पूरा करने के लिए किस प्रकार इस नर्क में आती है इसका चित्रण अलका जी ने अपने उपन्यासों में किया है। 'शेष कादम्बरी' में माया बोस अपने घर में पनाह दी, पिता समान मास्टर जी की शिकार होती है, यह चित्रण बहुत दिल दहला देनेवाला है। 'कलिकथा : वाया बाइपास' में भी कोलकाता में रहने वाली वेश्याओं का चित्रण किशोर बाबू द्वारा आया है। इस उपन्यास में वेश्याओं ने पूरे कोलकाता शहर को अपने कब्जे में किया है और यह समस्या बहुत उग्र रूप धारण कर रही है, इसका चित्रण किया है। इस प्रकार विधवा समस्या का भी चित्रण बहुत ही मार्मिकता से किया गया है। अलका जी ने एक विधवा नारी की स्थिति क्या होती है इसका चित्रण बहुत ही गहरायी से किया है। 'कलिकथा : वाया बाइपास' की किशोर की भाभी अपने पति के मर जाने के बाद अपने आप को बहुत अकेला समझने लगती है, बेसहारा मानती है। एक दु:खी, अकेली नारी का यहाँ पर वर्णन बहुत द्रवित करता है। उसी प्रकार 'शेष कादम्बरी' की रूबी दी भी एक विधवा नारी है जो अपने इस अकेलेपन को सामाजिक संस्था चलाकर दूर कर देना चाहती है। लेखिका ने समस्या का समाधान भी बताया है।

4. इसके अलावा अलका जी ने अकेलेपन की समस्या, शोषण की समस्या, बलात्कार की समस्या आदि प्रमुख समस्याओं के साथ-साथ अन्य समस्याओं को भी उजागर किया है, जो नारी के दर्द को नारी के शोषण को प्रस्तुत करती है। टेस्ट ट्युब जैसी आधुनातन समस्या, स्त्री भ्रुणहत्या, आधुनिक विचारों वाली बहू की समस्या आदि को एक समस्या के रूप में अलकाजी ने प्रस्तुत किया है। इन सभी समस्याओं को जानने के बाद नारी के कष्टमय जीवन पर प्रकाश पडता है। उपन्यास की यही सफलता है।

5. समाज विधवाओं को अपना जीवन यातनाओं के साथ बिताने को मजबूर कर देता है। विधवा नारी के प्रति सहानुभूति दिखाने में अलकाजी कामयाब हुई है। वेश्याओं को विवशताएँ एवम् विषम् परिस्थितियाँ इस नरक में ढकेलती है, वह जन्म से ही ऐसी नहीं होती। इस से यह स्पष्ट होता है कि लेखिका ने महानगरीय समस्या पर प्रकाश डालना चाहा है। पुरूषों के ही कामविलास के लिए स्त्रियों को वेश्यावृत्ति में दीक्षित किया जाता है। वेश्यावृत्ति नारी शोषण का सबसे कुत्सित रूप है।

6. बलात्कार एक ऐसी समस्या है कि इस घिनौने अत्याचार की शिकार स्त्री होती है, तब वह इस अपराध-बोध से निकल नहीं पाती। इस समस्या के प्रति लेखिका ने केवल संकेत मात्र किया है। इस समस्या का शिकार होने के बाद नारी को सारा जीवन यातना के साथ बिताना पडता है, इससे उसका व्यक्तित्व कुण्ठित हो जाता है। समाज में बलात्कार की समस्या उग्ररूप धारण कर रही है। इसे इस रूप से अलग रखने के लिए नारी को सक्षम बनना होगा। हर अन्याय का प्रतिकार करना सीखना होगा।

-----x-----